पुस्तक समीक्षा

दामोदर गौतम

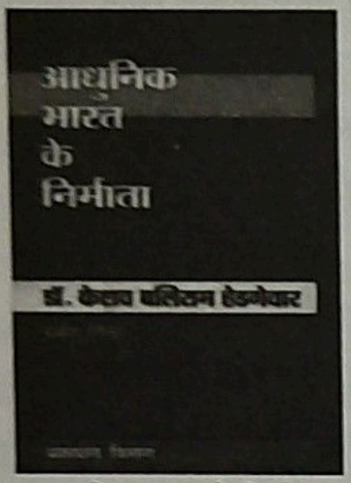

आधुनिक भारत के निर्माता
डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार
लेखक : राकेश सिन्हा
प्रकाशक : सूचना एवं प्रसारण मन्त्रालय
भारत सरकार,
पृ.-२४६, पांचवा संस्करण २०१८,
मूल्य-१४०/-

चर्चित स्तंभकार तथा राजनीतिक विशेषज्ञ एवं दिल्ली विश्वविद्यालय में राजनीति शास्त्र के प्राध्यापक राकेश सिन्हा द्वारा लिखी गई यह पुस्तक न केवल डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार के कर्मठ व्यक्तित्त्व को दर्शाती है, बल्कि उनके जीवन से सम्बन्धित ऐसी जानकारियां भी देती है जो अभी तक अल्पज्ञात थी। पुस्तक उस महान् व्यक्तित्व और चिन्तक के लिए समर्पित है जो कि पिछले दिनों पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी द्वारा संघ के कार्यक्रम में जाने का न्यौता स्वीकार करने और डॉ. हेडगेवार के निवास का दौरा करने पर विजिटर बुक में लिखे शब्द – ''मैं आज यहां भारत मां के महान सपूत डॉ. के. बी. हेडगेवार को श्रद्धांजलि देने आया हूं'' के कारण काफी चर्चा का विषय बना। डॉ. हेडगेवार कर्मठ सत्यनिष्ठ और राष्ट्रवादी होने के साथ-साथ एक स्वतंत्र चेता तथा भारतीय संस्कृति के परम उपासक थे। २१ अध्यायों में प्रस्तुत की गई इस शोध पुस्तक में हेडगेवार की संपूर्ण जीवन यात्रा को दर्शाया गया है। तेजस्वी बालक का जन्म, शिक्षा, हेडगेवार के कुल का इतिहास और मात्र ८ वर्ष की उम्र में देशभक्ति का भाव प्रस्फुटित होने जैसी घटनाएं, इस पुस्तक के प्रथम अध्याय को बहुत ही रोचक बनाती है। पुस्तक में उस घटना का सूक्ष्म वर्णन किया गया है जिसमें डॉ. केशव द्वारा मात्र ८ वर्ष की उम्र में ब्रिटेन की महारानी विक्टोरिया के राज्यारोहण के ६० साल पूरे होने पर भारत में जश्न मनाए जाने की मिठाई फैंक देना, बचपन से ही उनकी देशभक्ति को सहसा ही बताती है जो आने वाले वर्षों में दूसरी कई घटनाओं के रूप में प्रस्फुटित होने वाली थीं। लेखक ने हेडगेवार द्वारा नेशनल मेडिकल कॉलेज की पढ़ाई के दौरान देश में चलने वाली क्रांतिकारी गतिविधियों में भाग लेने संबंधी विभिन्न घटनाओं का इस पुस्तक में वर्णन किया है। डॉ. केशव अपने मेडिकल के अध्ययन के साथ-साथ देशभक्ति में भी अग्रणी थे। उनके द्वारा बंगाल में अनुशीलन समिति से जुड़ना उनकी देशभक्ति का एक अनूठा उदाहरण था। ये वे घटनाएं है जो हमारे युवाओं को अध्ययन के साथ-साथ देश प्रेम और राष्ट्रभक्ति की ओर प्रेरित करने का मार्ग प्रशस्त करती हैं। पुस्तक के आत्मदर्शन वाले अध्याय में लेखक द्वारा हेडगेवार के बताए गए देशभक्ति के १० सूत्रों का वर्णन किया है जो हमारे युवाओं को राष्ट्र चिंतन, राष्ट्रप्रेम, राष्ट्रभक्ति और आत्म स्वतंत्रता की ओर प्रेरित करते हैं।

पुस्तक में वर्णित हेडगेवार से संबंधित सभी जानकारियां जिन संदर्भ ग्रंथों और सूचियों से ली गई है वे भी इस पुस्तक की गहनता तथा वैज्ञानिकता को सिद्ध करती हैं। पुस्तक में डॉक्टर हेडगेवार का

बाल गंगाधर तिलक से प्रेरित होना तथा कांग्रेस द्वारा चलाए गए स्वतंत्रता आंदोलन में बढ़-चढ़कर भाग लेना और उसके उपरान्त राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ जैसी संस्था की नींव रखना, सभी घटनाओं का क्रमबद्ध वर्णन किया गया है। पुस्तक में डॉ. हेडगेवार के जीवन चरित्र, चिंतन, विचार और भ्रांतियों को दूर करना और उनका मूल्यांकन करने की लेखक द्वारा वैज्ञानिक और अनुसंधाननात्मक कोशिश की गई है।

महात्मा गांधी के नेतृत्व में चलाए गए सविनय अवज्ञा आंदोलन में संघ के स्वयंसेवकों द्वारा भाग लेने सम्बन्धी संदर्भ डॉक्टर मुंजे की डायरी से लेना पुस्तक की विश्वसनीयता को बढ़ाता है। लेखक ने पुसद सत्याग्रह तथा इसी के क्रम में दूसरा सत्याग्रह जिसमें की हेडगेवार को जंगल कानून तोड़ने पर तुरंत गिरफ्तार कर लिया गया, पुस्तक में सूक्ष्म और सटीक रूप में वर्णित है। यह वह सत्याग्रह था जो कि डॉ. हेडगेवार के मध्य प्रांत के सविनय अवज्ञा आंदोलन में सर्वाधिक सफल कार्यक्रमों में से एक था।

लेखक ने पुस्तक में डॉ. हेडगेवार की गिरफ्तारी के दौरान रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म पर बने मंच पर से जनसमुदाय को संबोधित करने वाले छोटे से किंतु उत्साहवर्धक भाषण का उल्लेख किया है। जिसमें डॉ. हेडगेवार ने कहा था कि – "एक दशक पूर्व अंग्रेजों के खिलाफ हमने असहयोग आंदोलन शुरू किया था अब हम अपनी बेसिक कानूनों की धज्जियां उड़ा रहे हैं। सरकार को गलतफहमी है कि दमन से जनता डर जाएगी। हिंदुस्तान का पूरा इतिहास ही धर्म एवं अधर्म के बीच लड़ाई का है। हमें अंग्रेजों से वैधानिकता का पाठ नहीं पढ़ना है जिसे वे कानून कहते हैं वह हमारी बेड़ियां हैं। जिसे वे अशांति कहते हैं वह आगे आने वाले समय की पूर्व सूचना मात्र है जिसे वे पहचान नहीं पा रहे हैं। समझौता एवं वार्ता साम्राज्यवादी समस्या का निदान नहीं है। जिन लोगों ने धोखे एवं खेल से पूरे राष्ट्र को बल प्रयोग से अपने अधीनस्थ कर रखा है, वे राक्षसी शक्ति के प्रतीक हैं। यदि वे समय रहते हिंदुस्तान से वापस नहीं चले जाते हैं तो जैसे माता सीता का अपहरण करने वाले राक्षस का विनाश हुआ था वैसा ही विनाश अंग्रेजों का भी होगा।" उस समय उनके ओजपूर्ण भाषण ने पूरे वातावरण को उग्र राष्ट्रवाद के रंग में रंग दिया था और वंदे मातरम् के जय घोष ने उन्हें विदाई दी।

१९२० से १९४० तक हिंदू महासभा, कांग्रेस और संघ के बीच रहे संबंधों का पुस्तक में सूक्ष्म एवं सटीक विवेचन किया गया है। हिंदू समाज में व्याप्त विषमताओं को दूर करना और उनके प्रयासों को भी पुस्तक में संदर्भित जानकारी दी गई है। स्वामी विवेकानंद के समान उनके द्वारा अल्प जीवन में किया गया कार्य राष्ट्रीय पुनर्जागरण के पर्याय के रूप में प्रतिष्ठित हुआ है। ऐसे व्यक्तियों का मूल्यांकन हमेशा अधूरा ही रहता है और इतिहास के घटनाक्रम में ही उनकी पूर्णता और प्रबलता स्थापित होती है। डॉ. हेडगेवार जैसे महापुरुषों पर लिखी गई पुस्तक अपने आप में लेखक द्वारा एक कर्मठ प्रयास है। इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं कि डॉ. हेडगेवार के चिंतन को किसी एक पुस्तक में समाहित किया जा सके। परंतु लेखक ने अपने अथक एवं अन्वेषणीय प्रयासों से इस पुस्तक के माध्यम से जनसाधारण एवं समाज वैज्ञानिकों के लिए राष्ट्रीय एवं सामाजिक चिन्तन के नए आयाम स्थापित करने की कोशिश की है।

सहायक प्राध्यापक, समाजशास्त्र,
राजकीय महाविद्यालय झण्डूता,
जिला - बिलासपुर (हि.प्र.)

ISSN 2250-2769

इतिहास दिवाकर

Itihās Diwākar

पीयर रिव्यूड त्रैमासिक अनुसंधान पत्रिका

(PEER REVIEWED QUARTERLY RESEARCH JOURNAL)

वर्ष १४ अंक १ चैत्र मास कलियुगाब्द ५१२३ अप्रैल २०२१

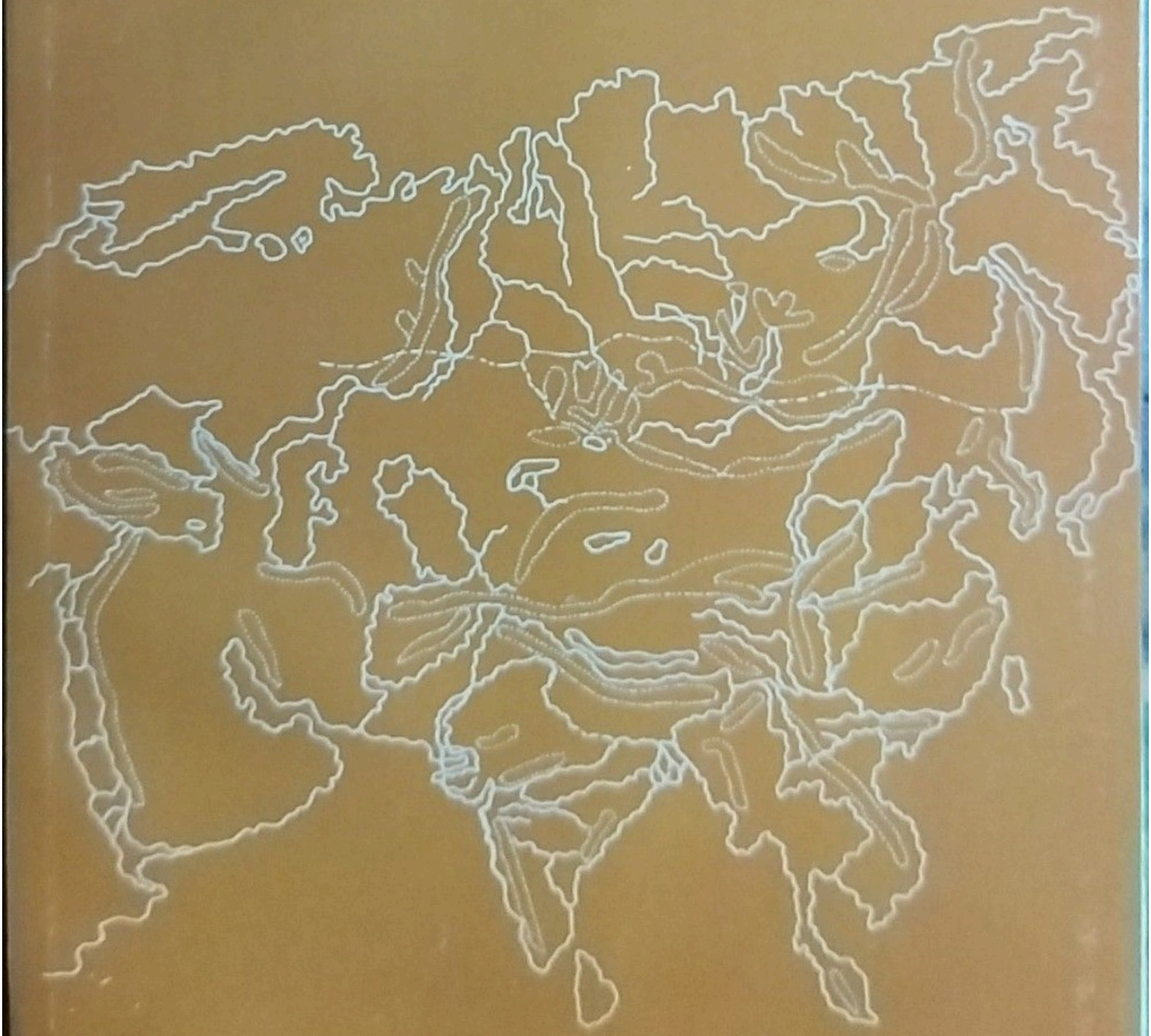

इतिहास शोध संस्थान नेरी, हमीरपुर (हि.प्र.)

ISSN 2250-2769

इतिहास दिवाकर

पीयर रिव्यूड मूल्यांकित त्रैमासिक अनुसंधान पत्रिका

वर्ष १४ अंक १ चैत्र मास कलियुगाब्द ५१२३ अप्रैल २०२१

अनुक्रमणिका

सम्पादकीय

पर्व विशेष

- नववर्ष प्रतिपदा — आचार्य विजय — ५

संवीक्षण

- ऋग्वेद एवं गद्दी जनजाति की लोकगाथाओं में सृष्टि रचना - एक तुलनात्मक अध्ययन — निकू राम — १४
- कश्मीर का रिसता घाव : सैयदों व कश्मीरियों का संघर्ष — डॉ. कुलदीप चन्द अग्निहोत्री — १८
- भारत में रोहिल्ला शक्ति का विस्तार और क्षेत्रीय शक्तियों का संघर्ष — डॉ. नवीन.सी. गुप्ता — २७
- Women's Participation in National Movement : Role of Socio-religious reform movements — Dr. Ankush Bhardwaj — ३८

व्यक्ति विशेष

- वजीर रामसिंह पठानिया का साहसिक एवं संघर्षमय जीवन — राजेन्द्र सिंह सम्बयाल — ४८

गांव का इतिहास

- देवता महाराज डकरेई व पुजारली गांव का इतिहास — डॉ. ओम प्रकाश शर्मा — ५६

श्रद्धाजंलि

- वीरव्रती शेर सिंह — डॉ. चेतराम गर्ग — ७२

पुस्तक समीक्षा

- आधुनिक भारत के निर्माता : डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार — दामोदर गौतम — ७४
- पण्डित दीनदयाल उपाध्याय का जीवन दर्शन — प्रो. पूरन चन्द टंडन — ७६

ध्येय पथ

- गतिविधियां — ऋषि भारद्वाज — ७८
- सम्पादक के नाम पत्र — ८३